परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य
(जुलाई, 2026 तथा जनवरी, 2027 सत्रों के लिए)

MSK-002 व्याकरण

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

परास्नातक कार्यक्रम
सत्रीय कार्य (2026—27)

पाठ्यक्रम कोड : MSK–002/2026–27

प्रिय छात्र/छात्राओं

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ——————————

नाम : ——————————

पता : ——————————

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ——————————

सत्रीय कार्य कोड : ——————————

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ——————————

दिनांक : ——————————

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए, और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजि,।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई, 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2027

जनवरी, 2027 सत्र के लिए : 30 सितंबर, 2027

सत्रीय कार्य

MSK–002 व्याकरण

पाठ्यक्रम कोड –MSK–002
पाठ्यक्रम शीर्षक – **व्याकरण**
सत्रीय कार्य – MSK –002/TMA/2026–2027

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

विशेषः इस सत्रीय कार्य में कुल 10 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक है।

1. 'सुपि च' सूत्र की उदारहण सहित व्याख्या और रामाणाम्' पद की सम्बद्ध सूत्रोल्लेख पूर्व सिद्धि–प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।
2. 'रमा शब्द के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए और 'मति' शब्द के समान रूप चलने वाले किन्हीं पाँच ह्रस्व इकारान्त, स्त्रीलिडंग शब्दों का उल्लेख कीजिए।
3. 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र के पदच्छेद और विभक्तियों का उल्लेख करते हुए उदारहण सहित व्याख्या कीजिए।
4. 'व्रजम् अवरुणाद्धि गाम्' यहाँ अधोरेखाडिंकत पद में प्रयुक्त विभक्ति के विधायक सूत्र का उल्लेख करते हुए उक्त उदाहरण वाक्य को स्पष्ट कीजिए।
5. 'हरये रोचते भक्तिः' यहाँ अधोरेखाडिंकत पद में प्रयुक्त विभक्ति के विधायक सूत्र का उल्लेख करते हुए उक्त उदाहरण वाक्य को स्पष्ट कीजिए।
6. (क) 'भवानि' अथवा 'भविता' की सिद्धि–प्रक्रिया को सम्बद्ध सूत्रोल्लेख पूर्वक स्पष्ट कीजिए।

   (ख) 'परोक्षे लिट्' अथवा 'तिड्.शित् सार्वधातुकम्' सूत्र के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
7. (क) 'लोट् च' अथवा 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र की सोदारण व्याख्या कीजिए।

   (ख) 'अभूत' अथवा 'भविष्यति' की सिद्धि–प्रक्रिया को सम्बद्ध सूत्रों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए।
8. (क) 'लिटस्तझयोरेशिरेच्' अथवा 'आतो डि.तः' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

   (ख) 'एधते' अथवा 'एधाञ्चक्रे' की सिद्धि–प्रक्रिया को सम्बद्ध सूत्रों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए।
9. (क) 'तत्प्रयोजको हेतुश्च' अथवा 'धातोः कर्मणः समानकर्तृ–कादिच्छायां वा' की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
10. 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए।